पच्चीस

प्रभु का अनुशासन

The Discipline of the Lord

इसीलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो। तुमने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की कि तुम्हारा लहू बहा हो, और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों की नाईं दिया जाता है, भूल गये हो कि हे मेरे पुत्र प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़। क्योंकि प्रभु जिस से प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है। तुम दुख को ताड़ना समझ कर सह लो: परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की संतान ठहरे! फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे तो क्या आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें जिससे जीवित रहें। वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिए ताड़ना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता में भागी हो जाएं। और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है। इसलिए ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो। और अपने पांव के लिए सीधे मार्ग बनाओ, कि लंगड़ा भटक न जाए पर भला चंगा हो जाए (इब्रा. 12:3-13)।

इब्रानियों की पुस्तक के प्रेरक लेखक के अनुसार हमारा स्वर्गीय पिता अपनी सभी संतानों को अनुशासित करता है। यदि हम कभी भी उसके द्वारा अनुशासित नहीं किये गए हैं, तो यह संकेत है कि हम उसकी संतान नहीं हैं। इसलिए हमें उसके अनुशासन के प्रति सजग और भावुक होने की ज़रूरत है। कुछ दिखावटी मसीही, जिनका ध्यान केवल परमेश्वर की अशीषों और भलाई पर ही केन्द्रित होता है, सभी नकारात्मक परिस्थितियों का कारण शैतानी हमले को बताते हैं, जो कि ईश्वरीय उद्देश्यों को रोकने के लिए होते हैं। यदि परमेश्वर अपने अनुशासन के द्वारा इन्हें पश्चात्ताप कराने का प्रयास कर रहा है तो यह एक बड़ी गलती से हो सकती है।

अच्छे दुनियावी अभिभावक अपने बच्चों को इस आशा के साथ अनुशासित करते हैं कि उनके बच्चे सीखेंगे, परिपक्व होंगे और एक उत्तरदायी व्यस्क जीवन के लिए तैयार होंगे। इसी तरह से परमेश्वर भी हमें अनुशासित करता है ताकि हम आत्मिक रूप से बढ़ें, उसकी सेवा में अधिक उपयोगी बनें, और उसके न्याय आसन के सम्मुख खड़े होने को तैयार हों। हमें वह इसलिए अनुशासित करता है कि हम उसकी पवित्रता के भागी बनें। हमारा प्रेमी स्वर्गीय पिता हमारी आत्मिक उन्नति की अभिलाषा करता है। पवित्रशास्त्र कहता है, ''जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वहीं उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा'' (फिलि. 1:6)।

किसी भी बच्चे को अपने माता-पिता द्वारा की जाने वाली पिटाई में मज़ा नहीं आता, और परमेश्वर द्वारा हमें अनुशासित किये जाने पर हमारा अनुभव ''आनन्ददायक नहीं बल्कि शोकपूर्ण'' होता है, जैसा हमने उपरोक्त में पढ़ा। तौभी, अन्त में हमारे लिये अच्छा ही होता है क्योंकि अनुशासन ''धार्मिकता के शांतिपूर्ण फल'' को उत्पन्न करता है।

कब और कैसे परमेश्वर हमें अनुशासित करता है?
When and How Does God Discipline Us?

किसी भी अच्छे पिता के समान, परमेश्वर अपने बच्चों को उनके अनाज्ञाकारी होने को ही अनुशासित करता है। जिस भी समय हम उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं, हम उसके अनुशासन के दुख के खतरे में होते हैं। तौभी, परमेश्वर बहुत ही करुणामयी है, और वह हमें सामान्यता पश्चात्ताप करने के लिए पर्याप्त समय देता है। उसका अनुशासन हमारे बार-बार अनाज्ञाकारिता के कार्यों को दोहराने पर उसकी चेतावनी के बार-बार दिये जाने पर आता है।

परमेश्वर हमें कैसे अनुशासित करता है? जैसा हमने पिछले अध्याय में सीखा, परमेश्वर का अनुशासन दुर्बलता, बीमारी या पूर्वकालिक मृत्यु को रूप में भी आ सकता है।

इसी कारण तुम में बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं और बहुत से सो

> भी गए। यदि हम अपने आपको जांचते तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें (1कुरि. 11:30-32)।

हमें यंत्रवत् रूप में यह परिणाम नहीं निकालना चाहिए कि सभी बीमारियां परमेश्वर के अनुशासन का परिणाम हैं (अय्यूब की स्थिति स्मरण आती है)। बीमारी के आने पर आत्मिक जांच करना बुद्धिमत्तापूण होगा कि क्या हमने अपनी अनाज्ञाकारिता के द्वारा परमेश्वर के अनुशासन का द्वार को खोला है।

स्वयं का न्याय करने पर हम परमेश्वर के न्याय से बच सकते हैं। अर्थात् अपने पाप को मानकर उसका पश्चात्ताप करने पर। यह परिणाम निकालना उपयुक्त होगा कि यदि हमारी बीमारी परमेश्वर के अनुशासन का परिणाम है तो पश्चात्ताप करने पर हम चंगाई के उम्मीदवार बन सकते हैं।

पौलुस ने कहा कि परमेश्वर के न्याय के द्वारा हम संसार के साथ दोषी ठहराए जाने से बच जाते हैं। इसका क्या अर्थ है? उसके ऐसा कहने का केवल इतना अर्थ था कि अनुशासन हमें पश्चात्ताप की ओर लेकर जाता है जिसके कारण हम अन्नत: संसार के साथ नरक नहीं भेजे जाते। इसे उन लोगों के द्वारा स्वीकार करना कठिन है जो उनके लिए पवित्रता को विकल्प मानते हैं जो कि स्वर्ग के मार्ग पर हैं। परन्तु जिन्होंने यीशु के पहाड़ी उपदेश को पढ़ा, वे जानते हैं परमेश्वर की आज्ञा का पालन करनेवाले ही उसके राज्य में प्रवेश कर पाएंगे (देखें मत्ती 7:21)। अत: यदि हम पाप में पड़ने पर पश्चात्ताप नहीं करते हैं, तो हम अनन्त जीवन से वंचित होने के खतरे में हैं। परमेश्वर की उसके अनुशासन के लिए स्तुति हो जो हमें पश्चात्ताप की ओर ले जाकर हमें नरक से बचाता है।

परमेश्वर के न्याय के उपकरण के रूप में शैतान

Satan as a Tool of God's Judgment

पवित्रशास्त्र के बहुत से पदों से यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर अपने अनुशासन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए शैतान का भी प्रयोग कर सकता है। उदाहरण के लिये, मत्ती 18 में पाए जाने वाले क्षमा न करनेवाले सेवक के दृष्टांत में यीशु ने कहा कि सेवक का स्वामी उस समय क्रोध से भर गया "जब उसने जाना कि क्षमा प्राप्त सेवक ने बदले में अपने सेवक को क्षमा नहीं किया।" परिणामस्वरूप उसने उस "क्षमा न करनेवाले सेवक" को दण्ड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया कि जब तक वह सब कर्ज़ न भर दे, तब तक उनके हाथ में रहे (मत्ती 18:34)। यीशु ने इस दृष्टांत का अन्त इन शब्दों के साथ किया:

> इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा (मत्ती 18:35)।

''दण्ड देनेवाले'' कौन हैं? ऐसा लगता है कि वे दुष्ट और उसकी सेना होगी। परमेश्वर अपनी संतान को पश्चात्ताप कराने के लिए उसे शैतान के हाथों में दे सकता है। और यदि वह तब भी पश्चात्ताप न करे तो परमेश्वर उसे हमेशा के लिए छोड़ देगा। कष्ट और विपत्ति लोगों को पश्चात्ताप के स्थान पर लाने का मार्ग हैं– जैसा उड़ाऊ पुत्र के साथ भी हुआ था (देखें लूका 15:14-19)।

पुराने नियम में हम परमेश्वर द्वारा दोषी व्यक्ति पर अपने क्रोध को प्रगट करने के लिए शैतान या दुष्ट आत्माओं का प्रयोग करते हुए देखते हैं। पहला उदाहरण न्यायियों के नौवें अध्याय में मिलता है, जहां हम पढ़ते हैं कि ''तब परमेश्वर ने अबीमेलेक और शकेम के मनुष्यों के बीच एक बुरी आत्मा भेज दी'' (न्यायि. 9:23), ताकि गिदोन के पुत्रों के विरोध में किये जानेवाले उनके बुरे कार्यों के कारण उन पर न्याय को लेकर आए।

बाइबल यह भी कहती है कि ''परमेश्वर की ओर से एक बुरी आत्मा'' शाऊल पर आती थी ताकि उसे पश्चात्ताप के स्थान पर लेकर आए (1शमू. 16:14)। तथापि, शाऊल ने कभी पश्चात्ताप नहीं किया, और वह अन्ततः अपने विद्रोह के कारण युद्ध में मारा गया।

पुराने नियम के इन दोनों उदाहरणों में पवित्रशास्त्र कहता है कि बुरी आत्माओं को ''परमेश्वर द्वारा भेजा'' गया था। इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर के पास स्वर्ग में बुरी आत्माएं हैं जो कि उसकी सेवा करने की प्रतीक्षा कर रही हैं। परन्तु इतना अवश्य है कि परमेश्वर शैतान की बुरी आत्माओं को अनाज्ञाकारी लोगों में सीमा में होकर कार्य करने देता है, ताकि वे पश्चात्ताप करें।

परमेश्वर के अनुशासन के अन्य तरीके
Other Means of God's Discipline

पुरानी वाचा के अन्तर्गत, हम यह भी पाते हैं कि परमेश्वर ने अपने लोगों पर विपत्ति आने देने के द्वारा उन्हें बार-बार अनुशासित किया जैसे अकाल या विदेशी लोगों द्वारा उन पर शासन करना। अन्ततः वे पश्चात्ताप करते और वह उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ से छुड़ाता। जब वर्षों के उत्पीड़न और चेतावनियों के पश्चात् उन्होंने पश्चात्ताप करने से इंकार कर दिया, तब परमेश्वर ने विदेशी शक्ति को उन पर पूरी तरह से नियंत्रण करने तथा उन्हें उनकी अपनी भूमि से निर्वासित करने की अनुमति दी।

नई वाचा के अन्तर्गत, निश्चय ही यह संभव है कि परमेश्वर अपने लोगों के जीवनों में संकटों को अनुमति देने के द्वारा उन्हें अनुशासित कर सकता है या फिर वह उनके शत्रुओं को उन पर प्रभावी होने की अनुमति दे सकता है। उदाहरण के लिये, इस अध्याय के आरम्भ में परमेश्वर के अनुशासन के संबंध में पद को दिया गया था (इब्रा. 12:3-13) जो कि इब्रानी विश्वासियों के संदर्भ में है जिन्हें उनके विश्वास

के लिये सताया गया था। तथापि, सभी तरह के सताव अनाज्ञाकारिता के परिणाम नहीं हैं। प्रत्येक मामले का न्याय अलग तरह से किया जाना चाहिए।

परमेश्वर के अनुशासन का सही प्रतिक्रिया
Rightly Reacting to God's Discipline

इस अध्याय के आरम्भ में उद्धृत शिक्षा के अनुसार हम एक या दो तरह से परमेश्वर के अनुशासन को गलत प्रतिक्रिया दे सकते हैं। हम या तो प्रभु की ताड़ना को हलकी बात जान सकते'' या फिर ''जब वह तुझे (हमें) घुड़के तो हियाव'' छोड़ सकते हैं। (इब्रा. 12:5)। यदि हम परमेश्वर के अनुशासन को ''हलकी बात'' मानते हैं, इसका अर्थ है कि हम उसे जानते नहीं, या हम उसकी चेतावनी की परवाह नहीं करते। परमेश्वर के अनुशासन से हियाव छोड़ने का अर्थ है कि उसे प्रसन्न करने का प्रयास न करना भी क्योंकि हम उसके अनुशासन को बहुत कठोर मानते हैं। इनमें से कोई भी प्रतिक्रिया गलत है। हमें यह जानना चाहिए कि परमेश्वर हम से प्रेम करता है, और यह कि वह हमारी भलाई के लिये हमें अनुशासित करता है। जब हम उसके प्रेमी अनुशासन वाले हाथ को जान जाते हैं, तब हमें पश्चात्ताप कर उसकी क्षमा को प्राप्त करना चाहिए।

पश्चात्ताप कर लेने पर, हमें परमेश्वर के अनुशासन से विश्राम की आशा करनी चाहिए। तौभी, हमें अपने पाप के परिणाम से विश्राम का अनुभव नहीं करना चाहिए, चाहे हमने परमेश्वर से सहायता या करुणा के लिये क्यों न कहा हो। परमेश्वर एक दीन और पश्चात्तापी आत्मा को जवाब देता है (देखें यशा. 66:2)। बाइबल प्रतिज्ञा करती है, क्योंकि उसका क्रोध तो क्षण भर का होता है, परन्तु उसकी प्रसन्नता जीवन भर की होती है। कदाचित् रात को रोना पड़े, परन्तु सवेरे आनन्द पहुंचेगा'' (भजन. 30:5)।

इस्राएलियों पर अपने न्याय को लाने के पश्चात् परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की:

> क्षण भर ही के लिये मैंने तुझे छोड़ दिया था, परन्तु अब बड़ी दया करके मैं फिर तुझे रख लूंगा। क्रोध में आकर मैं पल भर के लिये तुझ से मुंह छिपाया था, परन्तु अब अनन्त करुणा से मैं तुझ पर दया करूंगा (यशा. 54:7-8)।

परमेश्वर भला और करुणामयी है!

परमेश्वर के अनुशासन के संबंध में अतिरिक्त अध्ययन के लिए देखें. 2 इति. 6:24-31, 36-39; 7:13-14; भजन 73:14; 94:12-13; 106:40-46; 118:18; 119:67, 71; यिर्म. 2:29-30; 5:23-25; 14:12; 30:11; हाग्गै 1:2-13; 2:17; प्रेरित. 5:1-11; प्रका. 3:19